International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 38-40

प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन के विविध आयाम

सोनिया राठी
एम$_0$ ए$_0$ (स्वर्ण पदक विजेता), एम$_0$ फिल, पीएच$_0$ डी$_0$ शोधार्थी, जैन विश्वविद्यालय, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत।

सारांश
प्रवासी भारतीय जो संवेदनशील थे, उन्होंने विदेश में अपने प्रवास के दौरान आने वाली समस्याओं को, अपने आस–पास घटित घटनाओं को अपनी कलम के माध्यम से साहित्य द्वारा उजागर किया। अपने विचारों, अपनी सोच, दृष्टिकोण, चिंतन, व मान्यताओं द्वारा लेखन कार्य प्रारम्भ किया। अपने सामाजिक परिवेश से व परिस्थितियों से प्रभावित हो कर अलग–अलग विषयों में साहित्य की रचना की। यहीं से 'प्रवासी हिन्दी साहित्य' का 'श्री गणेश' हुआ।

मूलशब्द: प्रवास, प्रवासी हिन्दी साहित्य, सामाजिक परिवेश

प्रस्तावना
'प्रवास' शब्द का अर्थ हैः विदेश गमन, विदेश यात्रा, घर पर ना रहना। किसी दूसरे देश या बेगानी धरती पर वास करने वाला व्यक्ति प्रवासी है। 'भारत' से बाहर विदेश में रहने वाले भारतीयों के प्रायः चार वर्ग माने जाते हैं जो भारतीय भाषाओं के राजदूत हैं। प्रथम वर्ग में वे भारतवासी हैं जो ढाई हजार वर्ष पूर्व से धर्म–प्रचारकों के रूप में विदेश गए। 'महात्मा बुद्ध' ने महायान, हीनयान और बज्रयान संप्रदायों का गठन किया। ये सम्प्रदाय उस वाहन के सूचक हैं जिसके द्वारा धर्म के जिज्ञासु अपने लक्ष्य तक पहुंचते थे। महान 'अशोक' ने 'बौद्ध धर्म' ग्रहण करने के पश्चात, इस धर्म को फैलाने के लिए भिन्न–भिन्न देशों विदेशों में बौद्ध भिक्षु भेजे। स्वामी 'विवेकानंद' सन् 1902 में और 'स्वामी रामतीर्थ' सन् 1904 में 'अमरीका' गए परंतु वे केवल हिन्दू धर्म का प्रचार करने के लिए गए थे और कुछ समय पश्चात वापिस आ गए। द्वितीय वर्ग उन भारतीयों का है जो गिरमिटियों के रूप में एग्रीमेंट या शर्त बंदी प्रथा के अंतर्गत 'फिजी', 'मॉरीशस', 'त्रिनिडाड', 'गुयाना', 'सूरीनाम', 'ग्वाटामाला', 'दक्षिण अफ्रीका', 'मार्टिनी, 'जमैका' आदि देशों में गए। तृतीय वर्ग में वे भारतीय हैं जो रोजी–रोटी कमाने 'अमेरिका', 'इंग्लैण्ड', 'कनाडा', 'आस्ट्रेलिया' आदि देशों में जा बसे। चतुर्थ वर्ग ऐसे भारतीयों का रहा है जो शिक्षा, प्रशिक्षण, भारतीय राजकीय सेवा या विदेशी उपक्रमों में सेवा हेतु जाते हैं। आधुनिक काल में यह मानव स्वभाव का अंग बनता जा रहा है।

प्रवासी हिन्दी कथा साहित्य में अंतर्मन व अंर्तद्वन्द्वों उनसे पैदा हुए मनोविकारों का वर्णन किया जाने लगा। बहुत से प्रश्न प्रवासी कथा साहित्यकारों द्वारा स्पष्ट किए जाने लगे। व्यक्ति किस परिस्थिति में किस प्रकार का कार्य करने को मजबूर होता है अपराध की ओर उसका अर्न्तमन क्यों मुडता है कुंठा, निराशा हीनता कैसे उत्पन्न होती है प्रवासी भारतीयों की हत्या के मूल में कौन से कारण हैं पश्चिमी देशों की एक सुन्दर छवि भारत वासियों के मन में बनी हुई है। प्रवासी भारतीयों द्वारा लाए सामान, बढ चढ कर दिया जाने वाला दान, पश्चिमी देशों का वर्णन भारतीयों के मन में आर्कषण उत्पन्न करता हैं। इसी के चलते भारतीय विदेश में अच्छी नौकरियां और उज्जवल भविष्य के सपने संजोए गमन करते हैं। प्रारम्भ में प्रवासी भारतीय अपने ही देश की जीवन शैली को अपनाता है किन्तु मजबूरी वश उसे पश्चिमी जीवन शैली को भी अपनाना पडता है। अंशु जौहरी की कहानी 'जिंदगी को' की विशाखा अपनी सहेली भुम्मी के जीवन के अकेलेपन के बारे में सोचती है कि यह कौन सा अकेलापन है, जो व्यस्तता से उपजता है ? सब लोग एक साथ अपनी–अपनी जिंदगी जीते, इतने व्यस्त की यहां जिंदगी को बांटा नहीं जाता, बस जिंदगी बंटती चली जाती है। उसे तो लगता था कि व्यस्तताऐं अकेलापन महसूस नहीं होने देती।

प्रवास के दौरान प्रवासी भारतीय अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्ष करते हैं। वे जिन मूल्यों को छोड़ आए हैं और जिन्हें वे अपना रहे हैं उनमें सदैव संघर्ष चलता रहता है। अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए पश्चिम में भी भारतीयता को जीवंत रखना चाहते हैं। पश्चिमी देशों में महायुद्धों के कारण अस्तित्व का संकट पैदा हुआ। औघोगीकरण से उत्पन्न पूंजीवादी व्यवस्था और पूंजीवाद से पैदा हुआ अस्तित्व बोध इतना प्रचुर मात्रा में है कि ऐसे वैज्ञानिक परिवेश में, भीड़ भरे समुदाय में व्यक्ति की आइडेंटिटी क्राइसेस हो जाती है। बाहरी तनाव और परिस्थितियों के दबाव के कारण व्यक्ति का मन निरर्थकता, अलगाव घुटन से भर गया है। पश्चिमी देशों की भौतिकतावादी सुख सुविधा सम्पन्न जीवन में व्यक्ति यांत्रिक एवं निर्जीव सा जीवन जीने को मजबूर है। हर पल उसे मूल्यों के टूटने का अहसास होता है, हर पल वह घुटन, बैचेनी अलगाव और अजनबीपन का एहसास करता है। पश्चिमी परिवेश में युग जीवन की विड़म्बनाओं को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त होना ही था। परिवेश में तमाम अनुभूतियों को, जीवन के सत्यों को, संबंधों की विच्छिन्नता एवं पलायनवाद आदि रुपों को कथाकारों ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से अभिव्यक्त किया। इस प्रकार प्रवासी कथा साहित्य के सृजन के पीछे कई प्रकार के वैचारिक आन्दोलन थे। प्रवास में जब पहचान की बात होती है तब प्रवासी भारतीयों का हिन्दुत्व जाग उठता है। प्रवासी भारतीयों में कुछ ऐसे हैं जिन्हें अपना अतीत याद आता है, भारतीय संस्कार याद आते हैं। कुछ ऐसे हैं जिन्हें जाति संस्कार याद आते हैं। कुछ पश्चिमी संस्कृति में पूरी तरह रम व रंग गए हैं।

विदेश जैसे खुले माहौल में भी कई बार लड़कियाँ अपने विवाह की बात माता–पिता से नहीं कर पातीं। उन्हें ऊँची शिक्षा दी जाती है, नौकरी के अवसर उपलब्ध करवाएं जाते हैं किन्तु जब शादी की बात आती है तो माता पिता अपने और लड़कियों के बीच एक गहरी खाई बना लेते हैं जिसे पार करना लड़कियों के लिए कठिन होता है। विवाह एक ऐसी प्रथा है जिसने पुरूष को स्त्री पर अत्याचार के रास्ते खोले है। विवाह के कारण स्त्री का सर्वाधिक शारीरिक व मानसिक शोषण हुआ है। स्त्री को पुरूष के पराधीन बनाने का काम बखूबी किया है। भारतीय समाज की भांति प्रवासी भारतीय समाज मूल्यों और परंपराओं के नाम पर स्त्री को स्वतंत्र रूप में नहीं देखता। वह उसे पत्नी मां बेटी आदि किसी न किसी रिश्ते के बंधन में देखना चाहता है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने पर भी उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं। पुरूष को चयन का अधिकार

है किंतु स्त्री को नहीं। स्त्री चाहे परिवार की खुशी से अपने पति का वरण करे या अपनी खुशी से, अंत में वह केवल अपने पति के हाथों की कठपुतली मात्र बनकर रह जाती है। नारी का जीवन ससुराल और मायका नामक दो पाटों के बीच पिस कर रह जाता है। दोनों ही उसे अपने–अपने अनुरूप जीवन जीने को बाध्य करते है।जब कभी वह स्वयं स्वतंत्र निर्णय लेती है उसे पारिवारिक विरोध का सामना करना पड़ता है। उसके स्वयं के परिवार द्वारा किया जाने वाला विरोध उसे मानसिक यातना देता है। गौतम सचदेव की कहानी 'आकाश की बेटी' की साधना अपने परिवार को अपनी शादी के बारे में बिना बताए देविंदर के लिए विदेश आ गई थी। साधना अपने विवाह का स्वयं स्वतंत्र निर्णय लेती है इसलिए उसे पारिवारिक विरोध का सामना करना पडा। मायके से पूरा नाता टूट चुका था। जब ममी की मृत्यु हुई, तो किसी ने खबर दे दी थी, लेकिन इस चेतावनी के साथ कि वे उसकी सूरत तक देखना नहीं चाहते। फिर पापा की भी मृत्यु हो गई, जिसकी सूचना उसे किसी जान–पहचान वाले से पूरे दो वर्ष बाद जाकर मिली। भारतीय समाज में नारी को केवल कर्तव्य मिलते हैं, अधिकार नहीं। अधिकारों से वह वंचित रह कर भी अपने जीवन व परिवार को चलाती है। चाहे वह प्राचीन भारतीय नारी हो अथवा आज के युग की प्रवासी भारतीय नारी जीवन के हर मोड़ पर अपनी खुशी को दबाती है।

किसी भी जीव की शारीरिक संरचना जब समान होती है तब उसे समान नस्ल का बताया जाता है। नस्लवाद शब्द नस्ल शब्द से बना है। हर मनुष्य अपने पूर्वजों द्वारा विरासत में कुछ गुणों को पाता है। जिसमें उसका रंग–रुप भी शामिल होते हैं। सुषम बेदी के 'चिड़िया और चील' कहानी संग्रह में 'विभक्त' कहानी की नायिका अनन्या अमेरिका में रहते हुए भी भारत से मन की गहराईयों से जुड़ी हुई है। अंग्रेजों के उपेक्षा भाव के कारण ही वे काले लोगों की ओर आकर्षित होती हैं। वह अपार्टमैंट भी उन्हीं के इलाके में लेती है और विवाह भी एक काले लड़के से ही करना चाहती है। प्रवासियों में पनप रही बेगानगी का एक कारण नस्ली भेदभाव भी है। ऐसी स्थिति में वह भीतर से टूट जाते हैं। अनेक बार मनुष्य अपनी पहचान गँवा लेने के पश्चात इस स्थिति को ग्रहण करता प्रतीत होता है। उसके लिए उसकी भारतीय पहचान महत्वपूर्ण है, परन्तु परिस्थितियों के अनुकूल उसे अपनी पहचान गँवानी पड़ती है, जिसके कारण उसका भीतर से टूटना स्वाभाविक है। अर्थोपार्जन के लिए संघर्ष करता व्यक्ति भीतर तक झंझोड़ा जाता है। आजकल पश्चिमी समाज में अंतर्नसली विवाहों की गिनती बढ़ती जा रही है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि इससे बेगानापन खत्म हो रहा है। प्रवासी भारतीयों के प्रति यह भाव उसी तरह बरकरार है बल्कि बढ़ रहा है क्योंकि अंतर्नसलीय विवाह प्रवासी भारतीय बहू या जवाई को स्वीकार नहीं करते। इसी कारण वह परिवार में रहते हुए भी अपने आपको बेगाना महसूस करते हैं। माता–पिता की बात सुनना और समझना नई पीढ़ी के स्वभाव में नहीं है। इसी कारण विवाह का फैसला अकसर ही वे गलत ले लेते हैं। असल में पहली पीढ़ी के पास उनके अपने भारतीय संस्कार और मूल्य हैं और विदेश में जन्मी दूसरी पीढ़ी के पास उनके अपने भारतीय संस्कार और मूल्य हैं और विदेश में जन्मी दूसरी पीढ़ी के पास विदेशी समाज का प्रभाव है। वे माता–पिता के विचारों को कोई महत्व नहीं देते। यही विचार दूसरी पीढ़ी को उस पड़ाव पर ला खड़ा कर देते हैं यहाँ उन्हें गलत और ठीक का भान ही नहीं होता। 'चिड़िया और चील' कहानी संग्रह में 'जमी बर्फ का कवच' में अनीषा अंग्रेज लड़के जांमि से विवाह करना चाहती है। उसके पिता ने उसे बहुत समझाया कि अंतर्नस्लीय विवाह उसके लिए अनेक मुश्किलें उत्पन्न कर सकता है। तब उसने पिता की एक न सुनी। तब तो उसे अपनी शादी का फैसला स्वयं करने का भूत सवार था किन्तु जल्दी ही उसे अपनी गलती का अहसास हो गया। अब उसके मन में पछतावा, तनाव और निराशा रहने लगी।

प्रवासी जीवन का यथार्थ वापस लौटने के स्वप्न और न लौट पाने की बाध्यता के बीच दोहरेपन की मानसिकता होती है। अतीतानुराग की भावुकता से छुटकारा न पा सकने के कारण अपने वर्तमान को अस्वीकार करने और अतीत में जीने की मानसिकता खुद उनके लिए जड़ता, विषमता और अलगाव पैदा करती है। सुधीश पचौरी के अनुसार ''प्रवासियों में एक विभक्त भाव होता है एक ही वक्त में दो दुनियाओं को पुकारता है। एक वह जिसमें डॉलर कमाने, विदेश पलट होने, अमीर होने के लिए वह परदेस में नाना कष्ट सहता अपने देश की याद करता रहता है। दूसरा वह जो याद आने वाले 'देश' के यथार्थ को भी जानता है जिससे उबकर वह 'परदेश' भागा था। परदेस में उसका 'देश' प्रेम जोर मारता है और देश में परदेस प्रेम। वह अक्सर कहेगा : ये ब्लडी इंडियन कभी ठीक नहीं होगा। अरे अमेरिका में ये काम यों होता है, यों होता है। उसमें अपने देश के प्रति प्यार होगा लेकिन जैसे कि एक लुटेरे का प्यार होता है। उसका देश प्रेम डॉलरी रूट से आता है। वह अपने लिए एक तरफ अमरीका और साथ ही भारत में दूसरी तरफ गाँव चाहता है। पूँजीवादी सभ्यता की मारकाट वाली स्पर्धा, हर वक्त की असुरक्षा, अकेलापन उसे डॉलर देती है। आधे मन से वह उसमें लगता है लेकिन वह यह भी चाहता है कि डॉलर रहे संग में अपना गाँव भी रहे तो मजा है। इस तरह प्रवासी भाव देश–परदेस के बीच विभाज्य भाव है।'' प्रवासी भारतीयों की दोहरी मानसिकता के संदर्भ में दुर्गा प्रसाद गुप्त का मत है ''यह ऐसा भारतीय मन है जो एक तरफ भारत के आध्यात्मिक अतीत पर मुग्ध होता है, उसके लिए आहें भरता है तो दूसरी तरफ भौतिकता में उलझे उसके गरीब और पिछड़े वर्तमान पर आँसू बहाता है। उसके प्रति विरक्ति भाव से प्रेम प्रदर्शित करता है। – यह विभाजित मन उन प्रवासी भारतीयों का है जो न तो सही अर्थों में अपनी धर्म और संस्कृति के प्रति तटस्थ रह पाते हैं और न निर्वैक्तिक। फिर भी वे दोनों संस्कृतियों के प्रेमी आलोचक हैं।'' श्यामा चरण दुबे के अनुसार ''ये वे लोग हैं जो विदेशों में भारतीय और भारत में विदेशी जीवन शैली और मूल्यों के साथ जीते हैं। उनकी जड़ें भारतीय परम्परा में नहीं होती, पर साथ ही उनका पश्चिमीकरण भी बहुत सतही स्तर वाला होता हे। वे पश्चिमी संस्कृति के बाह्य लक्षणों का अनुकरण करते हैं, पर गहराई में जाकर उसकी आत्मा से साक्षात्कार करने से कतराते हैं। साथ ही वे पश्चिमी संस्कृति के सुख–सुविधा और स्वच्छंदता तो चाहते हैं पर उससे होने वाला सांस्कृतिक अवमूल्यन उन्हें चिन्तित करता है। वे जो हैं उसे न जीना और जो नहीं है उसे जीना उनकी नियति है।'' अतः स्पष्ट है प्रवास में व्यक्ति दोहरे जीवन के अंतर्द्वंद्व से गुजरता है। उसके अर्न्तजगत में एक तरफ पाश्चात्य जीवन की भौतिकवादी सुविधा की चकाचौंध है तो दूसरी ओर अपने निजी परिवेश से कटने का बोध। भौतिकवाद की सुविधा और अपनी जमीन से दूर होने का बोध ही उसके दोहरे जीवन का कारण होता है। प्रवासी जीवन से संबंधित लगभग सभी उपन्यासों में प्रवासी भारतीयों के दोहरे जीवन का चित्रण मिलता है।

विदेश में संस्कृति की भिन्नता के कारण प्रवासी भारतीयों को वहां तालमेल स्थापित करने में कठिनाई आती है। भारत में जैसी उनकी दिनचर्या थी उसी को वह विदेश में भी अपने जीवन का अंग बनाए रखना चाहते हैं। किन्तु धीरे–धीरे उनको आस–पास का वातावरण प्रभावित करने लग जाता है और उनकी जीवन–शैली में बदलाव आने लग जाते हैं। यह बदलाव इतना धीरे होता है कि विदेशी संस्कृति को अपनाने में उनको समय लग जाता है। विदेशी जीवन उनके लिए बिलकुल अलग होता है।किंतु उनके बच्चे उस परिवेश में शिक्षा ग्रहण करते है। उमेश अग्निहोत्री की कहानी "हार पर हार" में विदेश आए भाटिया जी के द्वारा पाश्चात्य समाज के स्वतंत्र

जीवन को व्यक्त किया गया है। भाटिया जी की बेटी पाश्चात्य संस्कृति से इतनी प्रभावित होती है कि अपना धर्म परिवर्तन कर लेती है। भाटिया जी इस बात से बेहद दुखी होते हैं। वह अपनी बेटी द्वारा किए धर्म परिवर्तन को अपने द्वारा दिए गए संस्कारों व भारतीय संस्कृति की पराजय मानते हैं। धर्म परिवर्तन के कारण उनकी बेटी अपने नाम को भी बदल लेती है। "नमिता के क्रिश्चियन बनने में भाटिया जी को अपनी अब तक की उपलब्धियाँ बेमानी लग रही थीं। उन्हें नमिता के निर्णय में अपने जीवन की पराजय महसूस हो रही थी। अपने जीवन की ही नहीं, अपनी समस्त संस्कृति की पराजय, भारत की पराजय। क्या वह अमेरिका इसीलिए आए थे? उनके बाद हिंदी बोलने वाला कोई नहीं। नमिता तो अंग्रेजी ही अधिक बोलती है। वह नमिता से नैंसी हो गई तो? अब धर्म भी गया।" विदेशों में भारतीय संस्कृति उन्हें दूसरों से अलग करती है क्योंकि उनका भोजन, पहरावा, धार्मिक आचार–विचार, भाषा, मान्यताएं और रीति–रिवाज उन्हें विदेशी समाज में एक अलग पहचान देते हैं। सुषम बेदी की 'झाड़' कहानी में विदेश में पले बच्चों के सांस्कृतिक अंतर को दर्शाया गया है।

उपसहांर

इस प्रकार प्रवासी हिन्दी साहित्य एक भिन्न संवेदना एवं सरोकार का आस्वादन कराता है। इसमें कथानक और पात्र नए हैं। जिसके द्वारा हम स्वदेश–विदेश के बीच अपने ही लोगों की समस्याओं को देखते हैं। भारतीय हिन्दी साहित्य की तुलना में प्रवासी हिन्दी साहित्य बहुत छोटा है। प्रवासी जीवन को प्रवासी हिन्दी साहित्य के माध्यम से साहित्यकारों ने अलग–अलग ढंग से प्रकट किया है। उनकी अभिव्यक्ति की शैली भी एक दूसरे से नितान्त भिन्नता लिए हुए है। इस कथा साहित्य में हमें प्रवासी भारतीयों के जीवन व उनकी समस्याओं से परिचित होने का सफल प्रयास है।

संदर्भ

1. अतर्वशी; उषा प्रियंवदा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. एक उम्मीद और, अभिमन्यु अनत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. कमरा नम्बर 103, सुधा ओम ढिंगरा, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर
4. तीसरी आंख, सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली
5. सुनीता जैन का कथा साहित्य, डॉ प्रवीण, विकास प्रकाशन, कानपुर
6. यादों का पहला पहर, अभिमन्यु अनत, मेघा बुक्स, नई दिल्ली
7. पंगा तथा अन्य कहानियाँ, दिव्या माथुर, मेघा बुक्स, नई दिल्ली
8. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, सुधा ओम ढिंगरा, शिवना प्रकाशन, सीहोर
9. देशांतर, तेजेन्द्र शर्मा, हिन्दी अकादमी, दिल्ली
10. बेघर आंखें, तेजेन्द्र शर्मा, यश पब्लिकेशनस, दिल्ली
11. बहता पानी, अनिल प्रभा कुमार, भावना प्रकाशन, दिल्ली
12. चिड़िया और चील, सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली